स्कूल की दीवार पर म्यूजियम और आर्ट गैलरी द्वारा कराई गई भारत की पहचान।

(A depiction of India's identity, created by the museum and art gallery, on the school wall.)

श्रीमती रीनू पाल (सहायक अध्यापक)
प्राथमिक विद्यालय नैनपुरा, विकास खण्ड – जालौन,
जनपद – जालौन, उत्तर प्रदेश

उद्देश्य/ पूर्व की स्थिति –

परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत अधिकांश बच्चे ग्रामीण एवं सामाजिक-आर्थिक रूप से साधारण पृष्ठभूमि से आते हैं। उनमें सीखने की प्रबल क्षमता होने के बावजूद बच्चों में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने, आगंतुकों से संवाद स्थापित करने तथा सार्वजनिक मंच पर आत्मविश्वास के साथ अपने विचार व्यक्त करने में झिझक, संकोच एवं अभिव्यक्ति कौशल की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी। शिक्षण प्रक्रिया मुख्यतः पाठ्यपुस्तकों तक सीमित होने के कारण अपने जनपद राज्य व देश की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा कलात्मक धरोहरों का ज्ञान बच्चों के लिए केवल सैद्धांतिक रह जाता था। विद्यालय में ऐसा कोई स्थायी एवं आकर्षक शिक्षण मंच उपलब्ध नहीं था, जहाँ बच्चे स्वयं देखकर, समझकर, स्पर्श कर, प्रश्न पूछकर तथा दूसरों को समझाकर सीख सकें। इसके कारण उनकी जिज्ञासा, रचनात्मकता, नेतृत्व क्षमता एवं सामान्य ज्ञान के विकास की संभावनाएँ सीमित हो रही थीं।

मैंने अनुभव किया कि यदि विद्यालय में ऐसा नवाचार विकसित किया जाए, जो बच्चों को सीखने के साथ-साथ सिखाने का अवसर प्रदान करे, तो उनमें आत्मविश्वास, संवाद कौशल, नेतृत्व क्षमता, सांस्कृतिक चेतना का विकास किया जा सकता है। इसी आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए विद्यालय में "मिनी म्यूजियम एंड आर्ट गैलरी (हमारी सांस्कृतिक धरोहर)" की परिकल्पना की , ताकि विद्यालय को एक जीवंत, अनुभवात्मक एवं सहभागितापूर्ण शिक्षण केंद्र में परिवर्तित किया जा सके, जहाँ प्रत्येक बच्चा केवल विद्यार्थी ही नहीं, बल्कि एक कुशल गाइड, प्रभावी वक्ता, जिज्ञासु शोधकर्ता एवं अपनी सांस्कृतिक विरासत का संवाहक बन सके।

क्रियान्वयन –

मैंने अपने विद्यालय के कक्षा-कक्ष की एक दीवार पर म्यूजियम एंड आर्ट गैलरी स्थापित की जिसको चार भागों में विकसित किया। पहला भाग **'हमाओ भारत अपनो भारत'** जिसके अंतर्गत भारत के नक्शे पर सभी राज्यों के नाम, राजधानी, वहाँ की वेशभूषा,भाषा, प्रमुख नृत्य व अभिवादन शब्द आदि जानकारी के साथ मेरे द्वारा हस्तनिर्मित भारत का मानचित्र लगाया गया है। दूसरे भाग **'उत्तर प्रदेश एक नज़र में'** जिसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश के सभी जनपदों के प्रमुख स्मारक स्थलों की फोटो चस्पा की, उनके नीचे बारकोड लगाए, जिसको मोबाइल के गूगल में जाकर स्कैन करके उनकी विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते है। तीसरा भाग **'भारतीय चित्रकला'** जिसके अंतर्गत चितेरी, मधुबनी,वर्ली आदि चित्रकलाओं के चित्र लगाए गए हैं व चौथे भाग **'पुरानी यादें'**

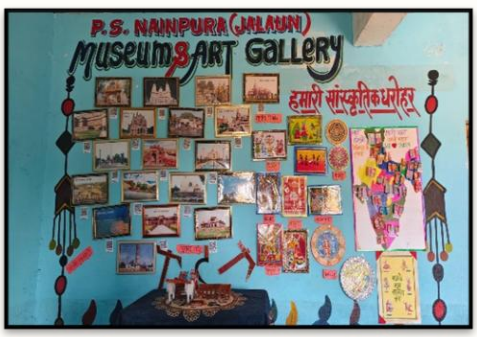

म्यूजियम में प्रदर्शित सामग्री

के अंतर्गत हस्तनिर्मित कृषि उपकरण जैसे हल खुर्पी,हसिया एवं बैलगाड़ी आदि के मॉडल म्यूजियम में लगाए गए है। इस तरीके से मैंने विद्यालय की दीवार को म्यूजियम का रूप दिया।

लोकभारती विविध

'म्यूजियम एंड आर्ट गैलरी' हमारी सांस्कृतिक धरोहर, बनी बच्चों की सीखने की नई पाठशाला

सर्वप्रथम शिक्षिका ने बच्चों को म्यूजियम के प्रत्येक भाग का विस्तृत परिचय कराया तथा वहाँ प्रदर्शित सामग्री के बारे में सरल भाषा में जानकारी दी। इसके साथ ही शिक्षिका द्वारा निर्मित **AI रोबोट** बच्चों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। यह रोबोट म्यूजियम में प्रदर्शित विषयवस्तु से संबंधित विस्तृत जानकारी देने के साथ-साथ बच्चों के मन में उत्पन्न प्रश्नों और जिज्ञासाओं का समाधान भी करता है। बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से जोड़ने के लिए उन्हें "म्यूजियम गाइड" की भूमिका निभाने का अवसर भी दिया जाता है। बच्चों का उत्साह बढ़ाने के लिए गाइड की तरह उनका ID कार्ड भी तैयार किया गया है। ID कार्ड पहनकर बच्चे स्वयं को वास्तविक म्यूजियम गाइड जैसा महसूस करते हैं और आत्मविश्वास के साथ अन्य बच्चों को म्यूजियम की जानकारी देते हैं। बच्चों की यह भूमिका देखकर अन्य बच्चे भी म्यूजियम गाइड बनने के लिए प्रेरित और उत्साहित होते हैं।

प्रति सप्ताह अलग-अलग बच्चों को गाइड की भूमिका सौंपी जाती हैं जिससे सभी बच्चों को मौका मिले। निरंतर अभ्यास और अवसर मिलने का परिणाम यह है कि आज कक्षा का प्रत्येक बच्चा पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अपने विद्यालय के मिनी म्यूजियम की जानकारी किसी भी आगंतुक के समक्ष निडरता से प्रस्तुत करता है। म्यूजियम के माध्यम से प्राप्त जानकारी को स्थायी रूप देने के लिए बच्चों हेतु समय-समय पर समान्य ज्ञान प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता, बोर्ड पर मानचित्र बनाकर उसमें राज्यों की स्थिति प्रदर्शित करना, 'खोजो तो जाने' आदि गतिविधियों का आयोजन किया जाता है।

गाइड की भूमिका में छात्र

बच्चों को अपनी जड़ों एवं सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने के उद्देश्य से प्रत्येक माह गाँव के एक वरिष्ठ नागरिक (महिला अथवा पुरुष) को विद्यालय में आमंत्रित किया जाता है। वे बच्चों के साथ अपने जीवन के अनुभव साझा करते हैं तथा पुरानी सभ्यता, संस्कृति, रहन-सहन, खान-पान, लोक परंपराओं, कृषि पद्धतियों एवं सामाजिक मूल्यों के बारे में रोचक एवं सहज तरीके से जानकारी देते हैं।

प्रभाव -

बच्चों द्वारा म्यूजियम में जानकारी प्रस्तुत करते हुए बनाए गए वीडियो को विद्यालय के व्हाट्सऐप ग्रुप और फेसबुक पेज पर नियमित रूप से साझा किया जाने लगा। इन वीडियो के माध्यम से अभिभावकों तक बच्चों की सीखने की प्रक्रिया, उनकी प्रतिभा और विद्यालय में किए जा रहे नवाचारों की सकारात्मक जानकारी पहुँचने लगी। इससे अभिभावकों में विद्यालय के प्रति विश्वास और रुचि बढ़ी तथा वे बच्चों की शैक्षिक गतिविधियों से अधिक जुड़ने लगे।

विद्यालय का मिनी म्यूजियम अब केवल विद्यार्थियों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि गाँव के हर नुक्कड़ पर चर्चा का विषय बन गया है। इसकी विशेषता और उपयोगिता से प्रभावित होकर विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थी भी इसे देखने आने लगे और इससे लाभान्वित हुए। इनमें से एक विद्यार्थी का चयन उत्तर प्रदेश पुलिस में हुआ, जो विद्यालय के लिए गौरव की

बात है। मिनी म्यूजियम और विद्यालय की शैक्षिक गतिविधियों से प्रभावित होकर कई अभिभावकों ने निजी विद्यालयों में पढ़ रहे अपने बच्चों का नामांकन हमारे विद्यालय में कराया। विद्यालय के एक छात्र का चयन सैनिक स्कूल तथा दो छात्राओं का चयन जय प्रकाश नारायण सर्वोदय विद्यालय (JPNSV) में हुआ। इसी सत्र में उच्च प्राथमिक विद्यालय के एक छात्र का चयन अटल आवासीय विद्यालय में भी हुआ।

16 मई, 2026

किसी ने मधुबनी शैली में चित्र बनाए तो किसी ने वारली कला के जरिए ग्रामीण जीवन दर्शाया

जालौन (उरई)। परिषदीय विद्यालयों में चल रहे ग्रीष्मकालीन शिविर में सीखने के साथ ही उनकी रचनात्मकता को भी निखारा जा रहा है। प्राथमिक विद्यालय नैनपुरा में आयोजित शिविर के तीसरे दिन बच्चों को भारतीय संस्कृति, कला और परंपरा से जोड़ते हुए भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्यों एवं भारतीय चित्रकलाओं पर आधारित रोचक गतिविधियां कराई गईं। विद्यालय की शिक्षिका रीनू पाल ने बताया कि साप्ताहिक ग्रीष्मकालीन शिविर के माध्यम से बच्चों को खेल-खेल में नई जानकारियां दी जा रही हैं, ताकि छुट्टियों के दौरान भी उनकी सीखने की प्रक्रिया जारी रहे। शिविर के तीसरे दिन बच्चों को भरतनाट्यम, कथक, कुचिपुड़ी, ओडिसी और कथकली जैसे भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्यों के बारे में जानकारी दी गई। बच्चों को इन नृत्यों की विशेषताएं, पहनावा और उनकी सांस्कृतिक महत्ता भी समझाई गई। बच्चों ने समूह बनाकर नृत्य मुद्राओं की प्रस्तुति भी दी। इसके साथ ही मधुबनी, वारली, कलमकारी और पिथौरा जैसी भारतीय पारंपरिक चित्रकलाओं से भी बच्चों को परिचित कराया गया। बच्चों ने रंगों और चित्रों के माध्यम से अपनी कल्पनाओं को कागज पर उतारा। किसी ने मधुबनी शैली में चित्र बनाए तो किसी ने वारली कला के जरिए ग्रामीण जीवन को दर्शाया। बच्चों की रचनात्मकता देखकर शिक्षक भी उत्साहित नजर आए। उन्होंने बच्चों को बताया कि भारतीय कला और संस्कृति हमारी पहचान है। नई पीढ़ी को अपनी परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहर की जानकारी होना बेहद जरूरी है। शिविर के अंत में बच्चों के कार्यों की सराहना की गई और उन्हें आगे भी इसी तरह रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया। शिविर में मोहन, राहुल, अखिलेश, प्रियंका, अवनी आदि ने भाग लिया।

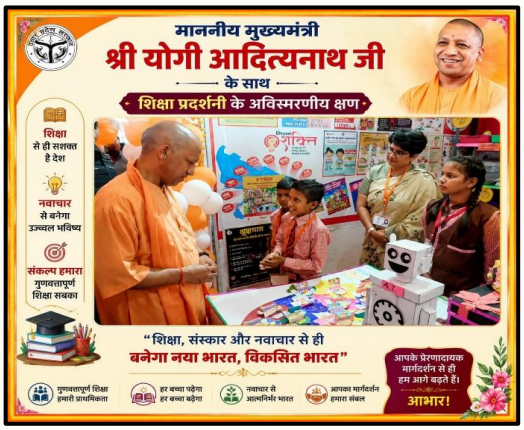

जनपद में आयोजित माननीय मुख्यमंत्री जी के कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के विद्यार्थियों ने माननीय मुख्यमंत्री जी सहित उपस्थित विशिष्ट अधिकारियों एवं अतिथियों के समक्ष अत्यंत आत्मविश्वास, स्पष्टता एवं प्रभावशाली ढंग से अपने प्रस्तुतीकरण दिए। विद्यार्थियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन से प्रभावित होकर माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने बच्चे की पीठ थपथपाकर उसका उत्साहवर्धन एवं शाबाशी दी। उपस्थित सभी अधिकारियों एवं अतिथियों द्वारा भी सराहना की गई। इस नवाचार से विद्यालय को जनपद स्तर पर एक नयी पहचान मिली है।